भू–राजनीति क्या है?
(What is Geo-Politics?)

भू–राजनीति आकार और भू–खंड की प्रकृति (Topography) के भोगोलिक तत्त्वों के आधा पर राजनीतिक विशेषतया राष्ट्रीय शक्ति और युद्ध का अध्ययन करती है। यह एक भू–क्षेत्र में राजनीतिक शक्ति के प्रयोग का विश्लेषण करती है और इस सम्बन्ध में भविष्यबाणियां भी करती है। विदेश नीति का विश्लेषण भी घरेलू तथा विश्व भौगोलिक तत्त्वों के आधार पर किया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को समझने, इनकी व्याख्या करने और इनके बारे में भविष्यवाणी करने के लिए भू-राजनीति वैज्ञानिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के भौगोलिक तत्त्वों के विश्लेषण पर बल देती है। यह राष्ट्रीय शक्ति को ज़मीनी शक्ति (Land Power) और सागरीय शक्ति (Oc[illegible]) के रूप में परिभाषित करती है। यह भूगोल को राष्ट्रीय शक्ति का एक शक्तिशाली निर्धारत तत्त्व मानती है।

भू-राजनीति दृष्टिकोण में केवल राजनीति पर भूगोल के प्रभाव के अध्ययन को ही महत्त्व नहीं दिया जाता बल्कि यह तो राजनीतिक शक्ति और भूगोल में सम्पर्कों और सम्बन्धों को समूचित रूप में ध्यान का केन्द्र मानती है। भू-राजनीति विश्व राजनीति में शक्ति को भूगोल के आधार पर ही विश्लेषित करती है और ज़मीनी शक्ति (Land Power) और सागरीय शक्ति (Ocean Power) को राष्ट्रीय शक्ति के बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्वों, यहां तक कि निर्धारक, भी मानती है।

इसमें राजनीतिक शक्ति का विश्लेषण भौगोलिक तत्त्वों के आधार पर किया जाता है और विभिन्न क्षेत्रों के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का महत्त्व का विश्लेषण किया जाता है। भू-राजनीति विदेश नीति के विश्लेषण का एक ढंग है जो कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवहार की स्थिति, भूमि की प्रकृति, जलवायु प्राकृतिक स्रोतों आदि के सम्बन्ध में किए जाने पर ध्यान केन्द्रित करता है। साधारण शब्दों में भू-राजनीति दृष्टिकोण भू-राजनीतिक व्यवस्था (Geo-Political System) को सामने रख कर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विश्लेषण करता है।

परन्तु इस अभ्यास में अलग-अलग भू-राजनीति वैज्ञानिक कुछ अलग-अलग रूप में अलग-अलग भू-राजनीतिक तत्त्वों के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन करते हैं। आरम्भ में फ्रैडरिक रैटज़ल (Fredrich Ratzel) और उसके दृढ़ समर्थक रुडोलफ कैजलिन (Rudolf Kjellen) ने राजनीतिक भूगोल (Political Geography) पर ही बल दिया। बाद में बीसवीं शताब्दी में प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् जर्मन विचारक कार्ल होशोफर (Karl Haushofir) ने इस विषय को एक नया स्वरूप दिया। उस ने जर्मनी में 'Institute of Geo-politic' के प्रधान के रूप में भू-राजनीतिक अध्ययन को एक नई दिशा दी। उस ने विभिन्न क्षेत्रों और देशों को मुख्य तौर पर भूगोलिक तत्त्वों के सन्दर्भ में समझने की कोशिश की और इसी आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की व्याख्या करके इसके भविष्य के स्वरूप के बारे में भविष्यवाणी भी करने का प्रयास किया। विशेष तौर पर विभिन्न देशों की भौगोलिक स्थिति भू-क्षेत्र की प्रकृति, आकार, एक क्षेत्र के देशों के जलवायु, उनके प्राकृतिक स्रोतों, जनसंख्यक विशेषताओं और तकनीकी विकास के स्तर के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया।

आरम्भ में इसको राजनीतिक भूगोल (Political Geography) का नाम प्राप्त था और यह राजनीति पर भूगोल के प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित करता था। परन्तु समय के साथ-साथ इसका नाम बदल कर भू-राजनीति (Geo Politics) हो गया और इस ने राजनीतिक शक्ति और भौगोलिक जीवन में सम्बन्धों का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया। इसने विश्व इतिहास में सागरी शक्ति (Ocean Power) और ज़मीनी शक्ति (Land Power) के सापेक्षित महत्त्व के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की व्याख्या करके कुझ भविष्यवाणियां करना भी आरम्भ कर दिया।

समकालीन समय में यह विश्व राजनीति में भौगोलिक कारकों और शक्ति में सम्बन्धों के विश्लेषण करने पर भी बल देता है। भू-राजनीति के आधार पर विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक कर्ताओं के हितों और सम्बन्धों का विश्लेषण करने के लिए भौगोलिक तत्त्वों, विशेष तौर पर भू-क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर नीति-निर्माण (विशेषतया विदेश नीति-निर्माण) के सिद्धान्त की पैरवी करता है।

हाशोफर के विचारों ने हिटलर की नीति की पैरवी की। उस के विचारों ने हिटलर की नाज़ी पार्टी की नीतियों और विचारधाराओं को प्रभावित किया था क्योंकि हौशोफर नाज़ी पार्टी का एक महत्त्वपूर्ण समर्थक था। भू-राजनीति के आधार पर हौशोफर और उसके समर्थकों ने नाज़ी पार्टी की विचारधारा को भी प्रभावित करने का प्रयास किया। परन्तु ऐसे प्रयास अधिक सफल न हुए क्योंकि नाज़ी पार्टी की विचारधारा राष्ट्रीय समाजवाद (National Socialism) के समर्थकों ने भू-राजनीति के समर्थकों द्वारा प्रस्तावित भौतिकवाद और भौगोलिक निर्धारण के सिद्धान्तों को कम ही महत्त्व दिया। परन्तु यह भी एक तथ्य है कि दूसरे विश्व युद्ध के वातावरण में हिटलर की नाज़ी पार्टी द्वारा अपनाई गई विस्तारवादी नीति (Nazi Party's Expansionist Policy of World War II) जर्मन भू-राजनीति से बहुत प्रभावित थी।

जर्मनी में विकसित हुए भू-राजनीति दृष्टिकोण ने विश्व के कुछ दूसरे विद्वानों को काफी प्रभावित किया और उन्होंने भी अपने-अपने भू-राजनीतिक सिद्धान्त प्रस्तुत किए।